

## शैक्षिक प्रशासन और विद्यालयीन वातावरण

PAPER APPEARED IN DESHBANDHU, DAILY NEWSPAPER OF M.P., ON 11<sup>th</sup>

JULY, 1993

— डॉ. ए. के. पाण्डेय

किसी भी शिक्षा संस्था से हम तब तक यह आशा नहीं कर सकते हैं कि वह सामाजिक तथा शिक्षात्मक विकास में योगदान करेगी जब तक कि वह एक अच्छे शिक्षा प्रशासक के द्वारा प्रशासित न हो। सफलता तथा असफलता की परिभाषा समय तथा स्थान के अनुसार बदलती रहती है। लेकिन एक सफल शिक्षा प्रशासक में शिक्षण संस्था को समझने की क्षमता जरूर होनी चाहिए। शिक्षा में बराबर ही प्रयोग होते रहे हैं और हमने देखा है कि साधारण प्रशासक अधिकांशतः शिक्षा प्रशासक के रूप में असफल रहे हैं। एक शिक्षा प्रशासक को अच्छा जन सम्पर्क अधिकारी होना पड़ता है। जो कि एक साधारण प्रशासक के असफलता की पहली कड़ी है और यही कारण है कि आज सैनिक स्कूल के प्राचार्य भी बाहर से लिए जाते हैं जो कुछ समय पहले तक मिलीटरी शिक्षा ; तउल म्कनबंजपवद बवचेद्ध के अधिकारी ही हुआ करते थे।

भारत के लिए शिक्षा प्रशासन एक नया शब्द है क्योंकि हम लोग यह मानते हैं कि एक अच्छा शिक्षक ही एक अच्छा शिक्षा प्रशासक हो सकता है। मैं इस बात को विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आप अपयाव को छोड़ दिया जाए तो यह विचार हमारी शिक्षा पद्धति के अनुकूल नहीं है। अगर प्रशासकीय गुणों की विवेचना की जाए तो हम यह देखेंगे कि शिक्षा प्रशासक के लिए भी व्यावसायिक प्रशासक की तरह प्रशासकीय गुणों को सिखाने वाली एक कोर्स की आवश्यकता है। प्रशासक एक बिन्दु है जिसके चारों तरफ उसके अन्तर्गत आने वाले सभी विभाग एक निश्चित कक्ष में चक्कर काटते हैं। एक अच्छा प्रशासक हमेशा ही अपने और इन कक्षों के बीच की दूरी को कम नहीं होने देता है और इसके लिए उसे सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है। अगर हम प्रशासकीय ढांचे को ध्यान से रखकर अपनी शिक्षण संस्था का विस्तार करें

तो शायद हम भी विकासशील देशों की तरह शिक्षा के क्षेत्रा में सफल हो सकते हैं तथा शिक्षा के क्षेत्रा में सफल हो सकते हैं तथा शिक्षा के क्षेत्रा में सफल हो सकते हैं तथा शिक्षा प्राप्त कर अपने वहां से उन देशों में जाने वालों की संख्या में कमी कर सके।

शिक्षा प्रशासक के रूप में प्रशासक अपने अंदर सभी गुणों का मनोवैज्ञानिक विकास कर पाना है। एक साथ मिलकर काम करने की कला जो शिक्षा प्रशासक में दिखाई पड़ती है उसका उदाहरण दूसरी जगह देखने में नहीं मिलता है। शिक्षा प्रशासक एक अच्छे समन्वयक की तरह काम करता है, उसको विद्यार्थियों शिक्षकों अभिभावकों अपने ऊपर के अधिकारियों तथा सामाजिक चार दीवारी के बीच एक समान्जस्य स्थापित करना पड़ता है। अगर यह किन्हीं कारणों से संभव नहीं हो पाता है तो इसका सीधा असर उस संस्था में पढ़ने वाले नए दिमाग पर पड़ता है। इस बात को हम न भूलें कि स्कूल ही वह जगह है जहां से सामाजिक कुरीतियों की शुरुआत भी होती है। समाज शिक्षा प्रशासकों को उनकी असफलताओं के लिए सिर्फ उन्हें दोष नहीं दे सकता। क्योंकि अगर कोई शिक्षा प्रशासक असफल होता है तो उसके लिए समाज भी उतना ही दोषी है जितना की वह खुद किसी भी संस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस संस्था को चलाने वाले कैसे लोग हैं तथा ये उस संस्था को शिक्षा रूप में देखते हैं। विद्यालय एक संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य हैं उसमें पढ़ने वाले बच्चों का सर्वापरि विकास एक शिक्षा संस्था अपने उद्देश्य में तभी कामयाब हो सकती है, जब वह एक योग्य शिक्षा प्रशासक के द्वारा प्रशासित हो। किसी भी शिक्षण संस्था का प्रशासक अपने कार्यों का उत्तर दायित्व दूसरों पर डालकर सफलता की उम्मीद नहीं कर सकता है।

शिक्षा प्रशासक शुरू में एक शिक्षक है लेकिन हमें यही नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षण और प्रशासन दो अलग प्रकार के गुण हैं। अधिकतर शिक्षा प्रशासक प्रगायशील तो होते हैं लेकिन प्रभावी नहीं होते हैं। हम देखते हैं कि शिक्षा प्रशासक के अधिकतर रूटीन नियमित कार्य करते हैं तथा उनमें नयापन का अभाव होता है। कोई भी संस्था मुख्यतः विद्यालय में जब तक सही और योग्य शिक्षा प्रशासक नहीं होंगे उनमें परिवर्तन प्राचार्य तो यही सोचकर खुश हो लेते हैं कि उनका मुख्य कार्य विद्यालय को 6-7 साल

स्वदों तक चला लेना ही है। यह कारण है कि सरकारी विद्यालयों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।

सरकार भी दस मामले में बहुत पहले यही कर रही है। सिर्फ वेतन में बढ़ौत्तरी ही अच्छे विभागों को आकर्षित करने के लिए काफी नहीं है बल्कि उन्हें प्रशासकीय कार्यों को करने के लिये विशेष गुणों को बढ़ाने के लिये अवसर भी देना चाहिये। सिर्फ यह कह देना ही अधिक नहीं है कि नई एवं पुरानी पीढ़ी की सोच में अंतर व वैचारिक मतभेद के कारण ही विद्यालयीन वातावरण बिगड़ रहा है। परस्पर समन्वय करना ही इस समस्या का एक मात्र साधन है। यानी तालमेल दोनों को ही बनाना होगा, समाज को भी और शिक्षा प्रशासक को भी बदले हुए वक्त की रफ्तार हमें समझनी होगी। हालांकि बदले वक्त के हिसाब से हम बदल तो रहे हैं लेकिन यह बदलाव बहुत धीमा है।

एक शिक्षा प्रशासक जिन परिस्थितियों में कार्य करता है यहां उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तथा कठिनाईयों के बीच उसे संस्था के शिक्षा के क्षेत्रा में आगे बढ़ाने का ध्यान रहता है। इसके लिये यह कुछ बदलाव चाहता है। मनुष्य शुरू से ही बदलाव के विरुद्ध रहा है। जब तक कि उसे उस बदलाव को सहने के लिए बाध्य न किया जाए और इस कार्य में समाज का उत्तर दायित्व शिक्षा प्रशासक से कम नहीं है। एक शिक्षा प्रशासक से कम नहीं है। कि उसके संबंध सबको मधुर हों। तभी वह अपने मिशन में सफल हो पायेगा। लेकिन परिस्थितियां अगर अनुकूल नहीं हो पाती है तो वह असफल हो जाता है। एक अच्छा शिक्षा प्रशासक अपने जीवन में जोखिम लेने से भी नहीं हिचकता है। बशर्ते वह शिक्षा संस्था के हित में हो न कि किसी और रूप में शिक्षण संस्थाओं में अभी भी सफल शिक्षा संस्था के हित में हो न कि किसी और रूप में शिक्षण संस्थाओं में अभी भी सफल शिक्षा प्रशासकों को कमी है वर्षों कि सामाजिक नहीं बैठ पाते हैं।